Name of the College - APSM College, Barauni, Begusarai
Name — Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt. — A.I.H & C
Lesson/plan for class - B.A, A.I.H & C(H), Part-I, Paper-I.
Date - 19-04-2021
Name of the topic - Importance of Rastrakutas Governance

राष्ट्रकूट शासन का महत्व

→ जैन, बौद्ध एवं शैव तीन धर्मों को संरक्षण प्रदान करने के कारण राष्ट्रकूट शासकों को सहिष्णु कहा जाता है। इनके द्वारा वास्तुकला के क्षेत्र में भी समन्वय की नीति अपनायी गयी। राष्ट्रकूट राजाओं द्वारा इस्लाम धर्म को भी छूट दी गई थी। उनके साम्राज्यों के तटीय नगरों में मस्जिदों का निर्माण कराया गया। राष्ट्रकूट - शासन - काल दक्षिण भारत के इतिहास में बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मराठों के पूर्व वैसा महत्वपूर्ण स्थान किसी का नहीं था। कृष्ण तृतीय ने रामेश्वरम तक विजय प्राप्त की। अरब लेखकों के अनुसार राष्ट्रकूट भारत में सर्वोच्च शासक थे। समस्त राज्यों में उनका स्वामित्व था। और हस्तिसेनाएँ, असंख्य थे; लेकिन उनमें पदातिसेना की ही अधिकता थी। अमोघवर्ष को संसार के चार प्रमुख बादशाहों में गिना गया है। राष्ट्रकूटों ने अरबों के साथ सद्भाव बनाए रखा। और उन्हें व्यापार - सम्बंधी अनेक सुविधाएँ दीं। गुर्जर -प्रतिहारों पर दबाव डालने के लिए उन्होंने अरबों से मित्रता की थी। राष्ट्रकूट राज्य में अरबों को न केवल व्यापारिक सुविधा थी, वरन् उन्हें अपनी मस्जिद बनाने और P.T.O.

Scanned with CamScanner

कानून बदलने की भी सुविधा थी। इससे उनकी अदूरदर्शिता का प्रमाण मिलता है। कहा जाता है कि ये लोग मुसलमान नगर-प्रशासक भी नियुक्त करते थे। धार्मिक दृष्टिकोण से दक्षिण में शिव और विष्णु की प्रधानता थी। ब्राह्मणधर्म पालक यज्ञ और तुलादान होते थे। दंतिदुर्ग ने उज्जैन में हिरण्यगर्भ नामक यज्ञ किया था। कृष्ण प्रथम ने एलोरा-मंदिर का निर्माण करवाया था। हिंदूधर्म के अतिरिक्त जैन धर्म की प्रधानता थी और अमोघवर्ष प्रथम इंद्र-चतुर्थ। कृष्ण द्वितीय तथा इंद्र तृतीय जैनधर्म के समर्थक थे। इस्लाम धर्म का प्रचार भी उनके राज्य में था और इससे उनकी धार्मिक सहिष्णुता का पता चलता है।

राष्ट्रकूट शासन-प्रणाली :—

सीधे प्रबंधवाले क्षेत्र 'राष्ट्र' अथवा 'विषयों' में विभाजित थे। एक 'विषय' में एक हजार से चार हजार तक गाँव होते थे। (करहाटक = कोड) विषय में अनेक 'भुक्तियाँ' होती थी। एक भुक्ति में पचास से सत्तर गाँव होते थे। गाँव शासन की सबसे छोटी इकाई थी। साम्राज्य के कुछ इलाकों का प्रबंध सामंत करते थे। प्रभाव सामंतों (जैसे गुजरात में) को पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त थी। वे राजा की आज्ञा के बिना भी गाँवों का हस्तांतरण कर सकते थे। सामंतों के अधीन उपसामंत होते थे और यद्यपि इनके अधिकार बहुत सीमित होते थे।

PTO

फिर भी ये लोग 'राजा' कहलाते थे। सामंतों को सम्राट की आज्ञा का पालन करना होता था और राजभक्ति दर्शाने के लिए दरबार में उपस्थित होना पड़ता था। समय-समय पर निश्चित संख्या में सैनिक भी भेजने पड़ते थे, और उनके यहाँ सम्राट के प्रतिनिधि भी रहा करते थे।

'राष्ट्र' के अधिकारी को "राष्ट्रपति" (राजस्व प्रबंध के प्रधान) जिला के अधिकारी को "विषयपति" और तहसील के अधिकारी को "भोगपति" कहा जाता था। विषयपति और भोगपति राजस्व सम्बंधी काम राष्ट्रकूटों की सहायता से करते थे। गाँवों का प्रशासन मुखिया और पटवारी के अधीन होता था।

अभिलेखों में 'विषय महत्तर' का भी उल्लेख मिलता है। उनका सैनिक ढंग शक्तिशाली और कुशल था। सैनिक जातियों के गाँवों में सैनिक प्रशिक्षण मिलता था। सेना में सभी जातियों के लोग होते थे — ब्राह्मण और जैन भी। प्रसिद्ध सेनापति बंकेय, श्रीविजय, नरसिंह आदि जैन थे। सामंतों के सैनिक भी समय पर बुलाये जाते थे। अनेक शूद्र भी सेना में नायक होते थे।

सरकारी आय का मुख्य साधन कृषि, खनिज और व्यापार था। वस्त्र उद्योग प्रसिद्ध था। अधिकांश लेन-देन विनिमय के जरिये होता था।

राष्ट्रकूटों की देन ⟶

P.T.O.

अन्य राजवंशों की तरह भारतीय इतिहास में राष्ट्रकूट की भी महत्वपूर्ण देन है। उनलोगों ने दक्षिण भारत के बहुत बड़े - क्षेत्र पर अपना साम्राज्य स्थापित किया, और लगभग २५० वर्षों तक उस क्षेत्र में अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया। ये लोग हिन्दूधर्म (मूलतः शिव और विष्णु) के मानने वाले थे। परन्तु अन्य धर्मों के प्रति भी वे काफी सहिष्णु थे। हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों के प्रति भी उनका दृष्टिकोण बड़ा उदार था। गुजरात शाखा का कर्कसुवर्ण स्वयं शैव था। परंतु उसने जैनों को भी दिल खोलकर दान किया। अमोघवर्ष ने जैनधर्म ग्रहण कर लिया था, परंतु उसके बाद भी हिन्दू धर्म के प्रति उसकी आस्था बनी रही। विदेशियों के साथ - भी उनका अच्छा सम्बंध था। ईराक के अरबों के साथ। राष्ट्रकूट राजाओं ने अरब व्यापारियों को तरह - तरह की सुविधाएँ प्रदान की।

कृष्ण प्रथम के समय एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण हुआ। इसकी भित्तियों पर अन्य देवी - देवताओं की आकृतियाँ अंकित हैं। इस पर चालुक्यों की मंदिर निर्माण - शैली का प्रभाव स्पष्ट है। ठोस चट्टान काटकर बनाया हुआ यह मंदिर भारतीय वास्तुकला की एक आश्चर्यजनक वस्तु है। राष्ट्रकूट अभिलेखों से यह पता चलता है कि ये लोग शिक्षा और साहित्य के बड़े - प्रेमी थे। विद्यालय - महाविद्यालय, और पुस्तकालयों को राज्य की ओर से उदारतापूर्वक दान दिया जाता था। कन्हेरी में एक बौद्धविहार का उल्लेख मिलता है अमोघवर्ष स्वयं एक लेखक था, और स्वयं उसने कन्नड भाषा में

P.T.O.

Scanned with CamScanner

काव्यशास्त्र पर कविराजमार्ग नामक पुस्तक की रचना की। अमोघवर्ष प्रधान के गुरु जिन सेन ने हरिवंश (783ई.) की रचना की। इसके अतिरिक्त और भी कई प्रसिद्ध कवि तथा लेखक हुए। जिन्होंने संस्कृत और कन्नड भाषा को काफी आगे बढ़ाया। जैन सेनापति चामुण्डराय ने इनकी नहीं में चामुंड-रायपुराण की रचना की थी। इस युग में अधिकांश लेखक जैन ~~सेनापति~~ थे। कवि पोन्न संस्कृत और कन्नड भाषाओं में रचना करता था, और उसकी प्रसिद्ध कृति — शांतिपुराण।

निष्कर्ष :— राष्ट्रकूट लोग अपने समय के शक्तिशाली शासक थे। इस बात का प्रमाण हमें सुलेमान के लेखो से मिलता है, राष्ट्रकूट लोगों ने दक्षिण में स्थायित्व प्रदान किया, व्यापार को प्रोत्साहित किया। और उत्तर-भारत के शक्तिशाली पाल तथा प्रतिहार नरेशों को रोककर रखा। दक्षिणापथ को उन्होंने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया। उनके विरुद्ध दक्षिण भारत का कोई भी राजवंश सिर नहीं उठा सका। डॉ. — अल्टेकर के अनुसार इस बात का कोई प्रमाण नहीं P.T.O

मिलता है। कि राष्ट्रकूट राजाओं ने गुर्जर-प्रतिहारों से युद्ध करने के लिए सिंध के अरब शासकों के साथ मैत्री-सम्बंध स्थापित कर लिया था। अरबों के साथ उनकी मित्रता थी; परंतु वह मित्रता व्यापार के लिए थी और बहुत-सारे अरब व्यापारी राष्ट्रकूट राज्य में आया-जाया करते थे। धार्मिक उदारता के चलते राष्ट्रकूट राजाओं ने उन्हें मस्जिद बनवाने की भी अनुमति दी थी। राष्ट्रकूट शासकों ने सामंतों के अधिकार को सीमित कर लिया था। और सारी शक्तियों को अपने हाथ केन्द्रित कर लिया था। दक्षिण भारत के इतिहास का यह सबसे ओजस्वी युग था। इनके पूर्व किसी वंश ने भारत के इतिहास में इतना महत्वपूर्ण स्थान नहीं प्राप्त किया था। उन्होंने भारत की सभी शक्तियों से सफलतापूर्वक टक्कर ली। वे लोग विद्या और कला के आश्रयदाता थे। अरब यात्रियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है। सुलेमान ने अमोघवर्ष को संसार के चार सम्राटों में से एक माना है। मुसलमानों के साथ उनका व्यवहार अच्छा था।

भारती कुमारी
19-04-2021